

Padma Shri



MATHA B. MANJAMMA JOGATI

Matha B. Manjamma Jogati is the Chairman of Karnataka Janapada (Folklore) Academy, an autonomous body of Government of Karnataka in the Department of Kannada & Culture. Matha Manjamma has been instrumental in popularizing the folk art forms practiced in rural Karnataka, Maharashtra and parts of Andhra Pradesh.

2. Born on 20th May, 1957, Matha Manjamma belongs to Jogappa community, a transgender community in North Karnataka, who are believed to be possessed by Goddess Yellamma. Matha Manjamma's life was very hard and she was disowned by her family as she was a transgender. After she left home, she met her guru Kaalavva Jogati from whom she learnt Jogati folk dance form and started performing along with her. Amid all her hardships, poverty and social exclusion, she mastered, among other art forms, the Jogati Nritya, Janapada songs and Kannada language sonnets in praise of various female deities.

3. Matha Manjamma has so far presented hundreds of folk dance performances throughout Karnataka besides participating in number of festivals, fairs and cultural activities outside the State and has been admired by one and all. She has also trained a number of students in this rare folk art form. Her performances have been recorded and screened through many documentaries, cinemas, Doordarshan programmes and Akashavani broadcasting. Also, she has showcased her talent by acting in many mythological dramas in various roles.

4. Matha Manjamma received the Karnataka Rajyotsava Award in the year 2010-11, Karnataka Janapada & Yakshagana Academy Award in 2006-07 apart from receiving a number of other awards and honours from different cultural institutions/organisations. She has also served as a Member of the Karnataka Janapada Academy from 2017 to 2019 before being elevated to the position of Chairman of the Academy in 2019, the first transgender to hold this position.



माता बी मंजम्मा जोगती

माता बी. मंजम्मा जोगती कर्नाटक सरकार के कन्नड़ और संस्कृति विभाग की एक स्वायत्त संस्था कर्नाटक जनपद (लोकगीत) अकादमी की अध्यक्ष हैं। कर्नाटक, महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में प्रचलित लोककला शैलियों को लोकप्रिय बनाने में माता मंजम्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

2. 20 मई, 1957 को जन्मी, माता मंजम्मा उत्तर कर्नाटक के किन्नरों के जोगप्पा समुदाय से ताल्लुक रखती हैं और उनके बारे में यह माना जाता है कि उन पर देवी येलम्मा का प्रभाव है। उनका जीवन दुखों से भरा हुआ था और किन्नर होने के कारण उनके परिवार ने उन्हें बेदखल कर दिया था। बेघर हो जाने के बाद उनकी भेंट अपनी गुरु कालव्वा जोगती से हुई जिनसे उन्होंने जोगती लोक नृत्य सीखा और उनके साथ प्रदर्शन शुरू कर दिया। अपनी तमाम कठिनाइयों, गरीबी और सामाजिक बहिष्कार के बावजूद उन्होंने अन्य कला रूपों, जोगती नृत्य, जनपद गीतों और कन्नड़ भाषा के काव्य पदों में विभिन्न देवीओं की स्तुति के रूप में निपुणता हासिल की।

3. माता मंजम्मा ने पूरे कर्नाटक में सैकड़ों लोक नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं और राज्य के बाहर अनेक त्योहारों, मेलों और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया और सभी ने उनकी सराहना की है। उन्होंने इस दुर्लभ लोक कला रूप के बारे में कई छात्रों को प्रशिक्षित भी किया है। उनके प्रदर्शन को कई वृत्तचित्रों, सिनेमाघरों, दूरदर्शन कार्यक्रमों और आकाशवाणी प्रसारण के माध्यम से पर्दे पर प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा, वे कई पौराणिक नाटकों में विभिन्न भूमिकाओं में अभिनय करके भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुकी हैं।

4. माता मंजम्मा को विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों/संगठनों से कई अन्य पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करने के अलावा वर्ष 2010-11 में कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार, 2006-07 में कर्नाटक जनपद और यक्षगान अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। वह 2019 में अकादमी के अध्यक्ष के पद पर पदोन्नत होने से पहले 2017 से 2019 तक कर्नाटक जनपद अकादमी के सदस्य के रूप में भी कार्य कर चुकी हैं और वह इस पद को संभालने वाली पहली किन्नर हैं।